सं. भ्रो..वि./रोहतक/183-84/33585--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि म. धजय उद्योग प्रा. लि., वहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री सन्त राम तथा उभके प्रवन्धकों केवीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

न्न्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

क्या श्री सन्त राम की मेवाग्रों का समापन नियायोचित तथा ठीक है ? तो यह किस राहत का हकदार है ?

. सं. ग्रो.वि./रोहतेक/183-84/33592. - चूंकि हर्षिमाणा के राज्यपाल की राग्रे है कि मं. अजय उद्योग प्रा. ति., बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री विजय वहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विश्राद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसिंगए, श्रेंब, श्रोंशोगिकं विवाद श्रिश्तियम, 19 47, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा, के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांव 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-ए.श्रो. (ई) श्रम-70/1348 दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेनू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा अभिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

नया श्री त्रिजय बहादुर की सेवाग्रों का समापन् न्यायोजिन तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकसार है ? → 🌂

सं. भ्रो.वि/रोहतक/4.83~84/33599- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. श्रंजय उंधोग थ्रा. लि. बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री राम भीर तथा उसके प्रबन्धकों कि बीच इसमें इसके बाद लिखित मन्मले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

भोर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवन्द को न्यायनिर्णय हुन् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल ६स के द्वारा तरकारी श्रिष्टिमूचना सं. 9641-1-श्रम 70/3273, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिष्टिसूचना सं. 3864-ए.ओ. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उनत श्रोधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम भीर की सेवाग्री का समापन वायोजित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. मो.वि./रोहतक/183-84/33606--चूंिक हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि में. ग्रज्य उद्योग प्रा. लि., बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री राधे श्याम तथा उसके नवन्धकों की बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद

्रधीर भूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :

धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहत के की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेत् निर्दिण्ट करते हैं, जो कि उस्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच याती विवादग्रस्त मामला है या उसत विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है —

ँ वांश्री राधे स्थाम को सेवार्थों के समीपन सीयोचित नथाठीक है ^हेता वह किस राहत का हकदार है ?

ार. श्री.वि:/रोहच्क/ 183-84/33613.--च्रिकी हरियाणां के राज्यपाल की राये है कि मै. श्रजय उद्योग प्रा. लि., वहांदुरगढ़ (रोहतक) के श्रीमक श्री हिर नारायण तथा उसके प्रवक्षकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचोगिक विवाद है...

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को स्थायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना वार्धभीय समझते है :

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद धिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा राज्यपाल इस के दौरा सूरकारी ग्रधिन्चना सं 9641—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रधिस्चना सं 3864—1.श्रो. (ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादणस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिलणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादणस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:——

वया श्री हरि नारायण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हकदार है?

सं स्रोति /रोहतक/183-84/33620---चूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं अजय उद्योग प्राति , बहादुरगढ़ (रोहतक) के थमिक श्री श्री भगवान सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के वीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

्रश्लीर चूंकि हस्स्मिणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिम्चना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिस्चना सं. 3864-ए.श्रों (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 हारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादयस्त या उसमे सुसगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय हेत निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रजन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसगत या सम्बन्धित मामला है :---

नया श्री श्री भगवान सिंह की सेनाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है? तो वह किस राहत का हिकदार है?

दिनांक 30 ग्रगस्त, 1984

मं भ्रो.वि./एफ.डी./137-84/32778.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. जितेन्द्रा इन्जीनियर्ज एण्ड फेन्नी— केटरज, प्लाट नं. 205, सैक्टर-24, फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री मुख राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में भोई ग्रीशोगिक विवाद हैं;

श्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिण्ट करना वांछनीय समझते हैं

इसलिए, ग्रव, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रयान की गर्ह भित्तियों का भूयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415—3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना मं. 11495-जी-श्रम-68/श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्कत ग्रिश्चिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादकरत या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ग्रियामिणीय के लिये निर्देष्ट करते हैं, जो कि उसते प्रवन्धको तथा श्रीमक के बीच या तो विवादक्रस्त मामला है या निगाद से सुमंगत ग्रिथवा संवैधित मामला है:—

क्या श्री मुख राज की सेवाग्रों का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?